

सुबह से शाम

S.S. Media
Group

तक की खबरें
मूल्य - 2₹

* वर्ष: 19 * अंक: 14 * मुंबई, रविवार, 13 सितंबर 2026 * संपादक:- एस.के.तिवारी * पेज: 4

BRICS समिट में भारत की बड़ी कूटनीतिक कामयाबी, 'नई दिल्ली घोषणापत्र' पर बनी सहमति

मोदी ने दिया 'विशेषाधिकार के पिरामिड' को 'साझेदारी के मंच' में बदलने का मंत्र, UN सुरक्षा परिषद में सुधार और ग्लोबल साउथ को नियम बनाने में बराबर भागीदारी की वकालत

संवाददाता

नई दिल्ली। भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली के भारत मंडपम में शनिवार को १८वें BRICS शिखर सम्मेलन का आगाज हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन के पहले ही दिन सदस्य देशों ने 'नई दिल्ली घोषणापत्र' पर आम सहमति जताई। पश्चिम एशिया में जारी तनाव और सदस्य देशों के अलग-अलग रुख के बीच साझा घोषणापत्र पर सहमति को भारत के लिए महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपलब्धि माना जा रहा है। सम्मेलन में ब्राजील, चीन, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, भारत, ईरान, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त अरब अमीरात सहित BRICS के ११ सदस्य देश भाग ले रहे हैं।

इसके अलावा आउटरीच के लिए आमंत्रित देशों के प्रतिनिधि भी सम्मेलन में शामिल हुए हैं। भारत ने १ जनवरी २०२६ को चौथी बार BRICS की अध्यक्षता संभाली थी। इस वर्ष समूह अपनी स्थापना के २० वर्ष पूरे कर रहा है। भारत की अध्यक्षता का विषय 'लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण' रखा गया है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत की BRICS अध्यक्षता का दृष्टिकोण जन-केंद्रित और मानवता को प्राथमिकता देने वाला रहा है। इसके तहत वर्षभर में ३५० से अधिक बैठकें हुईं और करीब ३० भारतीय शहरों ने विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों की मेजबानी की।

'पुरानी संस्थाओं से नहीं चलाई जा सकती बदलती दुनिया'

प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक शासन व्यवस्था में व्यापक सुधार की जरूरत बताते हुए कहा कि बदलती दुनिया को पुरानी पड़ चुकी संस्थाओं के माध्यम से नहीं चलाया जा सकता। प्रतिनिधित्व, जवाबदेही



और वैश्विक नियम बनाने की प्रक्रिया में बदलाव जरूरी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान वैश्विक शासन व्यवस्था एक पिरामिड की तरह है, जिसमें सत्ता और निर्णय लेने की शक्ति ऊपर केंद्रित है, जबकि नीचे मौजूद देश फैसलों से प्रभावित तो होते हैं, लेकिन उन्हें आकार देने में उनकी पर्याप्त भागीदारी नहीं होती। मोदी ने BRICS देशों से 'विशेषाधिकार के पिरामिड' को 'साझेदारी के मंच' में बदलने का आह्वान किया। उन्होंने वैश्विक शासन में सुधार के लिए १० प्रस्ताव तैयार करने और अगले शिखर सम्मेलन तक उन्हें 'BRICS रिफॉर्म रोडमैप' का स्वरूप देने का प्रस्ताव रखा।

UN सुरक्षा परिषद में सुधार अब और नहीं टाला जा सकता

प्रधानमंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार को अब और टाला नहीं जा सकता। इस मुद्दे पर होने वाली बातचीत को निश्चित समय-सीमा और स्पष्ट परिणामों से (शेष पेज २ पर)

दहिसर से भाईंदर का सफर होगा आसान, 5.13 किमी लिंक रोड दिसंबर 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य

संवाददाता

मुंबई। मुंबई और मीरा-भाईंदर के बीच यातायात जाम से राहत देने वाली महत्वाकांक्षी दहिसर-भाईंदर लिंक रोड (DBLR) परियोजना ने रफ्तार पकड़ ली है। करीब ५.१३५ किलोमीटर लंबे इस मार्ग के पूरा होने के बाद दहिसर पश्चिम से भाईंदर पश्चिम के बीच सीधा और तेज सड़क संपर्क उपलब्ध होगा। बीएमसी ने परियोजना को दिसंबर २०२८ तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है। अतिरिक्त महानगरपालिका आयुक्त (परियोजना) अभिजीत बांगर ने पैकेज-७ के तहत मीरा-भाईंदर महानगरपालिका क्षेत्र में प्रस्तावित भाईंदर इंटरचेंज के निर्माण स्थल का निरीक्षण किया और काम की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया तेज करने और निर्माण कार्य गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय में पूरा करने के निर्देश दिए। दहिसर-भाईंदर लिंक रोड में एलिवेटेड रोड, मैग्रोव क्षेत्र में खंभों पर सड़क, खाड़ी के ऊपर एलिवेटेड स्ट्रक्चर, साल्ट पैन क्षेत्र के ऊपर मार्ग, यातायात को अलग-अलग दिशाओं में वितरित करने वाले कनेक्टिंग रोड, इंटरचेंज और फ्लाईओवर जैसी कई इंजीनियरिंग संरचनाएं शामिल हैं। परियोजना का करीब ३.८३ किलोमीटर लंबा और ४५ मीटर चौड़ा मुख्य एलिवेटेड रोड मुंबई कोस्टल रोड (नॉर्थ) का अंतिम हिस्सा होगा। फिलहाल निर्माण स्थल पर गैबियन दीवार की फेंसिंग के साथ पुल की नींव के लिए पाइलिंग और पाइल कैप का काम किया जा रहा है। बीएमसी के मुताबिक अब तक ६० पाइल, ५ पाइल कैप, ४ पियर, पियर कैप और पुल के



९ सेगमेंट का काम पूरा हो चुका है। निर्माण स्थल पर आधुनिक मशीनरी उपलब्ध कराई गई है और अस्थायी एक्सेस ब्रिज भी चालू है। अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से लॉन्चिंग गार्डर का काम शुरू करने की तैयारी है। बांगर ने परियोजना के लिए जरूरी भूमि अधिग्रहण को प्राथमिकता के आधार पर तेजी से पूरा करने को कहा। इसके लिए विभिन्न प्राथिकरणों के साथ मीरा-भाईंदर महानगरपालिका से समन्वय करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने निर्माण स्थल पर सुरक्षा संबंधी मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) का सख्ती से पालन करने, पर्याप्त बैरिकेडिंग करने और काम की गुणवत्ता से समझौता नहीं करने को कहा। (शेष पेज २ पर)

186 एकड़ में बनेगा गोंडवाना विश्वविद्यालय का नया कैंपस, 1,100 करोड़ का मास्टर प्लान

गोंड वास्तुकला और आधुनिक शैली का होगा संगम, सीएम फडणवीस ने राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक व शोध सुविधाएं विकसित करने के लिए निर्देश

संवाददाता

नागपुर। गडचिरोली स्थित गोंडवाना विश्वविद्यालय का नया परिसर गोंड वास्तुकला की विरासत और आधुनिक स्थापत्य शैली के अनूठे संगम के रूप में विकसित किया जाएगा। शुक्रवार को मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विश्वविद्यालय के नए परिसर की योजना की समीक्षा करते हुए अत्याधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं के साथ भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर कैंपस तैयार करने के निर्देश दिए हैं। गडचिरोली में विश्वविद्यालय के लिए उपलब्ध १८६ एकड़ भूमि पर शैक्षणिक परिसर, प्रशासनिक भवन और विद्यार्थियों के छात्रावास सहित अन्य सुविधाएं विकसित करने के प्रस्तावित मास्टर प्लान का मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुतिकरण किया गया।फडणवीस ने कहा कि गडचिरोली में औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होने के साथ विद्यार्थियों के लिए शिक्षा और अनुसंधान के नए अवसर भी बढेंगे।

इसे देखते हुए विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं विकसित करना जरूरी है। उन्होंने देश और महाराष्ट्र के उत्कृष्ट शैक्षणिक परिसरों का अध्ययन कर गोंडवाना विश्वविद्यालय के कैंपस को सर्वश्रेष्ठ परिसरों में शामिल करने की दिशा में काम करने को कहा। विश्वविद्यालय का परिसर



१८६ एकड़ में विकसित किया जा रहा है और निर्माण के लिए करीब २७ लाख वर्ग फुट क्षेत्र उपलब्ध है। पूरे परिसर के विकास के लिए लगभग १,१०० करोड़ का मास्टर प्लान तैयार किया गया है। इसमें से केंद्र और राज्य सरकार की ओर से १५७ करोड़ मंजूर किए जा चुके हैं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि परिसर में विभिन्न शैक्षणिक और शोध गतिविधियों के लिए आधुनिक सुविधाएं विकसित करने के साथ पर्यावरण संरक्षण का भी विशेष ध्यान रखा जाए। भवनों के डिजाइन में स्थानीय गोंड वास्तुकला की पहचान दिखाई दे और आधुनिक जरूरतों का भी समावेश हो। वित्त एवं नियोजन राज्य मंत्री एड. आशीष जायसवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय की (शेष पेज २ पर)

नागपुर के 145 साल पुराने मारबत महोत्सव में उमड़ा जनसैलाब

सीएम फडणवीस के साथ जैकी श्रॉफ, सुभाष घई, अंकुश चौधरी और क्रिकेटर उमेश यादव हुए शामिल, विदेशी मेहमानों ने भी जानी ऐतिहासिक परंपरा संवाददाता

नागपुर। नागपुर की १४५ साल पुरानी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान मारबत महोत्सव इस वर्ष और भव्य स्वरूप में नजर आया। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ अभिनेता जैकी श्रॉफ, वरिष्ठ फिल्म निर्देशक सुभाष घई, अभिनेता अंकुश चौधरी और क्रिकेटर उमेश यादव सहित कई प्रमुख हस्तियां महोत्सव में शामिल हुईं। फ्रांस, नॉर्वे और फिनलैंड के वाणिज्य दूतों ने भी इस अनूठी परंपरा को करीब से देखा और इसके इतिहास की जानकारी ली। शुक्रवार को नागपुर की प्रसिद्ध मारबत-बडग्या शोभायात्रा की परंपरा को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के उद्देश्य से नागपुर महानगरपालिका ने इस वर्ष पहली बार 'मारबत महोत्सव' का आयोजन किया। शोभायात्रा और विभिन्न विषयों पर बनाए गए बडग्या को देखने के लिए सेंट्रल एवेन्यू स्थित गांधी पुतला चौक पर भव्य मंच तैयार किया गया था। मुख्यमंत्री फडणवीस



और अन्य अतिथियों ने मंच से मारबत-बडग्या शोभायात्रा पर पुष्पवर्षा की। इस दौरान बड़ी संख्या में मौजूद लोगों में खासा उत्साह दिखाई दिया। विदेशी मेहमानों ने भी मारबत परंपरा की पृष्ठभूमि, उसके इतिहास और नागपुर की संस्कृति में उसके महत्व को जाना। कार्यक्रम में नागपुर के पालकमंत्री (शेष पेज २ पर)

महाराष्ट्र में स्कूलों की जमीनी हकीकत जांचने निकला शिक्षा विभाग 'चला शाळेत जाऊया' अभियान के पहले चरण में करीब 150 स्कूलों का निरीक्षण, पढ़ाई से लेकर पेयजल, शौचालय, पोषण आहार और शिक्षकों की कार्यक्षमता तक की समीक्षा

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र के स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता और बुनियादी सुविधाएं वास्तव में कैसी हैं, विद्यार्थियों की उपस्थिति कितनी है और सरकारी शैक्षणिक योजनाओं का लाभ जमीन पर कितना पहुंच रहा है, इसकी पड़ताल के लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने 'चला शाळेत जाऊया' अभियान शुरू किया है। अभियान के पहले चरण में राज्यभर में करीब १५० स्कूलों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया गया। शुक्रवार को स्कूल शिक्षा मंत्री दादाजी भुसे ने स्वयं गडचिरोली और नागपुर जिलों के स्कूलों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। भुसे ने कहा कि अभियान का उद्देश्य स्कूल के दरवाजे तक पहुंचकर प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और जरूरी शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध कराना है। राज्य सरकार इसके लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने जिलाधिकारियों, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ स्कूलों की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों तथा शैक्षणिक और प्रशासनिक मुद्दों पर चर्चा की। अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक और उपनिदेशकों को विभिन्न जिलों का नोडल अधिकारी बनाया गया है। पहले चरण में ८ और ९ सितंबर २०२६ को अधिकारियों ने संबंधित जिलों में पहुंचकर स्कूलों का निरीक्षण किया। तहसील स्तर पर कम से कम दो स्कूलों की शैक्षणिक व्यवस्था और बुनियादी सुविधाओं की जांच के बाद तहसील तथा जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठकें भी



की गईं। राज्य के संतुलित और सर्वांगीण विकास के लिए १० जिलों को विस्तारित आकांक्षी जिलों के रूप में चुना गया है। इनमें स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव ने जालना, स्कूल शिक्षा आयुक्त ने गडचिरोली और महाराष्ट्र प्राथमिक शिक्षा परिषद के राज्य परियोजना निदेशक ने पालघर जिले की जिम्मेदारी संभाली है।

शेष सात जिलों के लिए राज्यस्तरीय शिक्षा निदेशकों को पालक अधिकारी नियुक्त किया गया है। स्कूलों के निरीक्षण के दौरान केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि स्वच्छ पेयजल, शौचालय, कक्षाओं की स्थिति, परिसर की सफाई, खेल मैदान, सुरक्षा दीवार, बिजली, फर्नीचर और ई-सुविधाओं की भी जांच की गई। विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, शिक्षण-अध्ययन प्रक्रिया, यूनिकोड तथा पोषण आहार की गुणवत्ता और उसके समय पर वितरण की स्थिति का भी जायजा लिया गया। इसके अलावा निपुण महाराष्ट्र (शेष पेज २ पर)

कटे होंट और तालू वाले बच्चों का मुफ्त इलाज महाराष्ट्र के 15 अस्पतालों में मिलेगी सुविधा

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में कटे होंट और तालू (क्लेफ्ट लिप एंड पैलेट) जैसी जन्मजात समस्या से पीड़ित बच्चों को अब मुफ्त और व्यापक उपचार उपलब्ध कराया जाएगा। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की पहल पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान (NHM) महाराष्ट्र, बजाज फाउनेस और 'स्माइल ट्रेन इंडिया' के बीच तीन वर्ष के लिए समझौता किया गया है। इस पहले के तहत राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) की जांच में कटे होंट या तालू की समस्या से पीड़ित पाए जाने वाले बच्चों को जिला नोडल अधिकारी के औपचारिक रेफरल के जरिए 'स्माइल ट्रेन इंडिया' के मान्यता प्राप्त अस्पतालों में उपचार के लिए भेजा जाएगा। बच्चों को सर्जरी, अस्पताल में भर्ती, दवाइयां, पोषण संबंधी सेवाएं, दंत उपचार और स्पीच थेरेपी सहित जरूरत के अनुसार यात्रा की सुविधा भी मुफ्त दी जाएगी। मरीज के भोजन, आवास और यात्रा का खर्च 'स्माइल ट्रेन इंडिया' वहन करेगा। सर्जरी से पहले की जांच तथा उपचार से जुड़ी सर्जरी के बाद उत्पन्न होने वाली जटिलताओं का खर्च भी संस्था उठाएगी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि इस



बीमारी के इलाज की जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर १८००१०३८३०१ पर संपर्क किया जा सकता है। ऐसे बच्चों की पहचान और उपचार की आवश्यकता निर्धारित करने के लिए स्माइल ट्रेन के भागीदार अस्पतालों, RBSK टीमों और जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्रों (DEIC) के समन्वय से जांच शिविर लगाए जाएंगे। सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारियों को भी कटे होंट और तालू वाले बच्चों की पहचान के लिए प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन दिया जाएगा। उपचार के लिए मरीजों को भेजने, उनका रिकॉर्ड रखने और जिला नोडल अधिकारियों के साथ समन्वय की (शेष पेज २ पर)

गुजरात सचिवालय और BRICS सम्मेलन को बम से उड़ाने की धमकी, देवघर से हिरासत में युवक

संवाददाता

देवघर। गुजरात के गांधीनगर स्थित सचिवालय और BRICS सम्मेलन के दौरान बम धमाके की कथित धमकी देने वाले ई-मेल की जांच की कड़ी झारखंड के देवघर तक पहुंच गई है। गुजरात पुलिस की एक टीम ने शनिवार को देवघर के नगर थाना क्षेत्र से एक युवक को हिरासत में लिया है। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस फिलहाल युवक की पहचान और जांच से जुड़ी विस्तृत जानकारी सार्वजनिक नहीं कर रही है। देवघर के एसपी प्रवीन पुष्कर ने युवक को हिरासत में लिए जाने की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि गुजरात पुलिस ने ई-मेल के जरिए धमकी दिए जाने से जुड़े मामले में युवक को हिरासत में लिया है और उससे पूछताछ की जाएगी। कार्रवाई में देवघर पुलिस गुजरात पुलिस का सहयोग कर रही है। जानकारी के मुताबिक, पिछले दिनों ई-मेल के माध्यम से गुजरात सचिवालय को उड़ाने और रूँघण सम्मेलन के दौरान बम धमाका करने की धमकी मिलने के बाद गुजरात पुलिस ने जांच शुरू की थी। जांच के दौरान मिले तकनीकी इनपुट के आधार पर मामले की एक कड़ी देवघर से जुड़ने की बात सामने आई। इसके बाद गुजरात पुलिस की टीम देवघर



पहुंची और नगर थाना क्षेत्र से युवक को हिरासत में लिया। पुलिस अब धमकी के लिए इस्तेमाल किए गए ई-मेल और उससे जुड़े तकनीकी साक्ष्यों की जांच कर रही है। युवक के ई-मेल, व्हाट्सएप और अन्य डिजिटल माध्यमों की भी पड़ताल किए जाने की बात सामने आई है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि धमकी किसने और किस उद्देश्य से भेजी तथा इसके पीछे किसी अन्य व्यक्ति या नेटवर्क की भूमिका है या नहीं। फिलहाल युवक को केवल हिरासत में लेकर पूछताछ किए जाने की जानकारी सामने आई है। मामले में उसकी भूमिका और धमकी से उसका संबंध जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

2 मुबह से शाम तक की खबरें 13 सितंबर से 19 सितंबर 2026

संपादकीय



अंतरिक्ष में आत्मनिर्भरता की नई उड़ान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ गया है। देश के पहले जियोसिंक्रोनस इमेजिंग सैटेलाइट का सफल प्रक्षेपण और उसे निर्धारित कक्षा में स्थापित किया जाना केवल वैज्ञानिक सफलता नहीं, बल्कि पृथ्वी अवलोकन, आपदा प्रबंधन, कृषि, पर्यावरण और सामरिक निगरानी के क्षेत्र में भारत की बढ़ती क्षमता का प्रमाण भी है। इस उपग्रह की विशेषता यह है कि यह बड़े भू-भाग पर लगातार नजर रखते हुए कम अंतराल पर तस्वीरें उपलब्ध करा सकता है। इससे जमीन पर तेजी से बदलती परिस्थितियों को समझने और समय रहते निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होगी। अंतरिक्ष तकनीक का वास्तविक महत्व तभी है, जब उसका लाभ धरती पर आम नागरिक तक पहुंचे। इस दृष्टि से यह मिशन विशेष महत्व रखता है। देश के विभिन्न हिस्सों में बाढ़, चक्रवात, जंगल की आग या दूसरी प्राकृतिक आपदाओं के समय प्रभावित क्षेत्रों की ताजा तस्वीरें राहत एवं बचाव एजेंसियों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती हैं। सड़कें कहां टूटी हैं, पानी किन इलाकों में फँल रहा है और कौन-से क्षेत्र का संपर्क टूट गया है, इसकी जानकारी मिलने से राहत कार्यों को बेहतर ढंग से संचालित किया जा सकेगा। भारत जैसे विशाल और विविध भौगोलिक परिस्थितियों वाले देश में ऐसी तकनीक की आवश्यकता और भी अधिक है। हिमालयी क्षेत्रों में भूस्खलन और अचानक आने वाली बाढ़ से लेकर तटीय राज्यों में चक्रवात तक, देश को हर वर्ष विभिन्न प्राकृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमी घटनाओं को लेकर भी चिंता बढ़ी है। ऐसे में अंतरिक्ष आधारित निगरानी आपदा से होने वाली जन-धन की हानि कम करने की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती है। इस उपलब्धि का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू राष्ट्रीय और समुद्री सुरक्षा से जुड़ा है। भारत की विशाल समुद्री सीमा और विस्तृत भू-भाग की प्रभावी निगरानी के लिए आधुनिक तकनीकी संसाधनों की जरूरत लगातार बढ़ रही है। पृथ्वी की सतह पर होने वाले महत्वपूर्ण बदलावों की नियमित तस्वीरें मिलने से संबंधित एजेंसियों को परिस्थितियों का बेहतर आकलन करने में सहायता मिल सकती है। वास्तविक उपयोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि प्राप्त आंकड़ों का कितनी तेजी और सटीकता से विश्लेषण किया जाता है।

इस मिशन का लाभ खेत-खलिहानों तक पहुंचना भी महत्वपूर्ण है। फसलों की स्थिति, वनस्पति में बदलाव, भूमि की सतह और मिट्टी की नमी से संबंधित उपग्रह आंकड़ों का वैज्ञानिक विश्लेषण कृषि संबंधी नीतियां बनाने में सहायक हो सकता है। सूखा या अत्यधिक वर्षा से प्रभावित क्षेत्रों का समय रहते आकलन होने पर सरकार राहत और कृषि सहायता की योजनाएं अधिक प्रभावी ढंग से तैयार कर सकती है। हालांकि अंतरिक्ष से बड़ी मात्रा में डेटा प्राप्त करना उपलब्धि का पहला चरण है। असली चुनौती उसे किसानों और स्थानीय प्रशासन के लिए उपयोगी सूचना में बदलने की है। यदि उपग्रह से मिली जानकारी केवल वैज्ञानिक संस्थानों और सरकारी फाइलों तक सीमित रह जाए तो उसकी क्षमता का पूरा लाभ नहीं मिलेगा। जरूरी सूचनाओं को कृषि विभागों, आपदा प्रबंधन एजेंसियों और स्थानीय प्रशासन तक तेजी से पहुंचाने की व्यवस्था विकसित करनी होगी। पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से भी पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों की भूमिका महत्वपूर्ण है। जंगलों के क्षेत्रफल में बदलाव, वनाग्नि, जलाशयों की स्थिति, भूमि उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव की निगरानी बेहतर नीति निर्माण में मददगार हो सकती है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण और भूमि उपयोग में होने वाले बदलावों को समझने में भी अंतरिक्ष से प्राप्त आंकड़े उपयोगी होंगे। इसरो की सफलता को भारत के तेजी से बदलते अंतरिक्ष क्षेत्र के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। अब निजी क्षेत्र और स्टार्टअप भी रॉकेट तकनीक, उपग्रह निर्माण, डेटा विश्लेषण और अंतरिक्ष आधारित सेवाओं में अपनी भागीदारी बढ़ा रहे हैं। इससे रोजगार, अनुसंधान, निवेश और तकनीकी नवाचार के नए अवसर पैदा हो सकते हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में बढ़ती सफलता के साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ेंगी। अत्याधुनिक उपग्रह तैयार करने के साथ उनसे प्राप्त सूचनाओं का सुरक्षित और जनहितकारी उपयोग सुनिश्चित करना होगा। अंतरिक्ष मलबा, साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण जैसी चुनौतियों पर भी समान रूप से ध्यान देना जरूरी है।

पेज 1 का शेष...

BRICS समिट में भारत...

जोड़ा जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में मतदान शक्ति, नेतृत्व की भूमिका और नीतिगत प्राथमिकताओं को भी वर्तमान आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप बनाने की जरूरत है। मोदी ने कहा कि वैश्विक आर्थिक वृद्धि में महत्व-पूर्ण योगदान देने वाले देशों को वैश्विक आर्थिक शासन को आकार देने में भी उचित भूमिका मिलनी चाहिए।

ग्लोबल साउथ को ‘रूल टेकर’ नहीं, ‘रूल मेकर’ बनाने पर जोर

प्रधानमंत्री ने एआई, साइबरस्पेस, अंतरिक्ष, बायोटेक्नोलॉजी और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों का उल्लेख करते हुए कहा कि भविष्य केवैश्विकनियम तय करनेमें समान भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। उन्होंने ग्लोबल साउथ को केवल नियम मानने वाले देशों की भूमिका से निकालकर नियम बनाने में भागीदार बनाने की क्वालत की। इसके लिए BRICS के माध्यम से ग्लोबल साउथ के युवा राजनयिकों और नीति-निर्माताओं को वार्ता कौशल, व्यावहारिक प्रशिक्षण और कानूनी विशेषज्ञता उपलब्ध कराने का प्रस्ताव भी रखा गया।

समुद्री नाविकों के लिए आपातकालीन सहायता नेटवर्क का प्रस्ताव

प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक व्यापार में समुद्री नाविकों के योगदान का उल्लेख करते हुए ‘नाविकों के लिए आपात-कालीन सहायता नेटवर्क’ बनाने का प्रस्ताव रखा। इसके तहत सदस्य देशों के समुद्री अधिकारियों और राजनयिक मिशनों को आपस में जोड़ा जाएगा, ताकि संकट की स्थिति में अलर्ट, चिकित्सा सहायता, परिवार को सूचना और सुरक्षित निकासी में तेजी लाई जा सके।

BRICS के लिए स्थायी कार्यान्वयन तंत्र का सुझाव
मोदी ने कहा कि "घए की अध्यक्षता हर साल बदलती है, लेकिन इसका अरर समूह के संस्थागत कामकाज की निरंतरता पर नहीं पड़ना चाहिए। उन्होंने ‘ट्रोइका’ व्यवस्था के जरिए विभिन्न पहलों और फैसलों की प्रगति पर लगातार नजर रखने के लिए निरंतरता एवं कार्यान्वयन तंत्र बनाने का प्रस्ताव रखा। फैसलों, समय-सीमा और क्रियान्वयन की स्थिति दर्ज करने के लिए सुरक्षित डिजिटल संग्रह तैयार करने का सुझाव भी दिया गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि BRICS अपने २०वें वर्ष में परिपक्वता और जिम्मेदारी के नए दौर में प्रवेश कर चुका है। समूह किसी के विरोध में नहीं, बल्कि सभी को रोश लेकर आगे बढ़ने में विश्वास करता है। अब BRICS के भीतर बनी एकता और आम सहमति को वैश्विक मंच पर ठोस नतीजों में बदलने का समय है।

ईरान-UAE के मतभेदों के बीच घोषणापत्र पर सहमति

नई दिल्ली घोषणापत्र के मसौदे पर बातचीत अंतिम समय तक चली। पश्चिम एशिया के संघर्ष सहित कुछ मुद्दों पर ईरान और संयुक्त अरब अमीरात के रुख में मतभेद बताए गए। BRICS में निर्णय आम सहमति से लिए जाते हैं, इसलिए किसी एक सदस्य की आपत्ति भी संयुक्त घोषणापत्र को रोश सकती थी। कई दौर की बातचीत के बाद सदस्य देश साझा दस्तावेज पर सहमत हुए। प्रधानमंत्री मोदी ने पहले दिन की बैठक के बाद घोषणापत्र अंगीकार किए जाने की घोषणा करते हुए कहा कि अब इन प्रस्तावों को ठोस परिणामों में बदलना सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है।

इथियोपिया के प्रधानमंत्री से मोदी की द्विपक्षीय वार्ता

शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री मोदी ने इथियोपिया के प्रधानमंत्री डॉ. अबी अहमद अली के साथ द्विपक्षीय बैठक की। दोनों नेताओं ने आर्थिक सहयोग, रक्षा एवं सुरक्षा साझेदारी और क्षमता निर्माण सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की समीक्षा की। क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान हुआ। मोदी ने BRICS सम्मेलन में इथियोपिया की भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि इससे ग्लोबल साउथ की सामूहिक आवाज को

मजबूती मिली है। सम्मेलन से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतेर्रेस से भी मुलाकात की थी। दोनों के बीच दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जारी संघर्ष, नौवहन की स्वतंत्रता, सतत विकास, मानव-केद्रित एआई और वैश्विक खाद्य सुरक्षा सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई। प्रधानमंत्री ने BRICS@20 का संदेश देते हुए कहा कि यदि दुनिया का भविष्य साझा है तो उसे आकार देने का अधिकार भी साझा होना चाहिए। ‘आवाज से असर तक और विशेषाधिकार से साझेदारी तक’ के सिद्धांत के साथ BRICS को अगले २० वर्षों के लिए अधिक महत्वाकांक्षी एजेंडा तैयार करना होगा।

नागपुर के 145 साल...

चंद्रशेखर बावनकुले, वित्त एवं नियोजन राज्य मंत्री एड. आशीष जायसवाल, विधायक कृष्णा खोपडे, मोहन मते, प्रवीण दटके और डॉ. राजीव पोतदार, महापौर नीता ठाकरे तथा उपमहापौर लीला हाथीबेड मौजूद रहे। फ्रांस के वाणिज्य दूत पैट्रिक लेवेरीनो, नॉर्वे की वाणिज्य दूत मोनिका निगल गाई और फिनलैंड की वाणिज्य दूत पेट्रा थोमन ने भी महोत्सव में शिरकत की। इसके अलावा स्थायी समिति सभापति शिवानी दाणी-वखरे, सत्ता पक्ष नेता रॉरेंड बोरकर, महानगरपालिका आयुक्त डॉ. विपिन इटनकर, पूर्व महापौर दयाशंकर तिवारी व अर्चना डेहनकर, साम टीवी के संपादक नीलेश खरे, एबीपी माझा की संपादक सरिता कौशिक, प्रसिद्ध शेफ विष्णु मनोहर और ग्राफिक डिजाइनरविवेक रानडे सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

महाराष्ट्र में स्कूलों की जमीनी...

अभियान, **PAT, UDISE Plus, PGI PGI** डेक्स, **SDG** लक्ष्य, पीएम श्री स्कूल, आदर्श स्कूल, पीएम पोषण योजना, विद्या समीक्षा केंद्र, दीक्षा और महास्कूल GIS सहित विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। पहले चरण में पालक अधिकारियों और जिला नोडल अधिकारियों ने करीब १५० स्कूलों का दौरा कर स्कूल प्रशासन, शैक्षणिक गुणवत्ता और सरकारी योजनाओं की स्थिति देखी तथा आवश्यक सुधार के निर्देश दिए। अभियान का दूसरा चरण २२ और २३ सितंबर २०२६ को होगा। इसमें दोबारा स्कूलों का निरीक्षण करने के साथ तहसील और जिला स्तर पर समीक्षा बैठकें होंगी और सामने आई कमियों पर सुधारात्मक कार्रवाई की जाएगी।

दहिसर से माईदर का सफर...

वेसावे से भाईदर तक करीब ६० किमी का कोस्टल रोड नेटवर्क

मुंबई महानगर क्षेत्र में यातायात को सुगम बनाने के लिए बीएमसी मुंबई कोस्टल रोड (नॉर्थ) विकसित कर रही है। इंटरचेंज और कनेक्टिंग सड़कों सहित पूरी परियोजना करीब ६० किलोमीटर की होगी, जिसके जरिए वेसावे से भाईदर तक तटीय सड़क संपर्क विकसित किया जाएगा। मेगा परियोजना को A, B, C, D, E, F और दहिसर-भाईदर लिंक रोड सहित कुल सात पैकेजों में बांटा गया है। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त (इन्फ्रास्ट्रक्चर) गिरीश निकम, उप मुख्य अभियंता (मुंबई कोस्टल रोड-नॉर्थ) वैभव गांधी सहित संबंधित इंजीनियर और सलाहकार मौजूद रहे।

कटे होंठ और तालू वाले...

जिम्मेदारी प्रत्येक मान्यता प्राप्त अस्पताल के परियोजना निदेशक को दी जाएगी। संबंधित जिले के सिविल सर्जन सर्जरी से पहले अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर की सुविधाओं और एनेस्थेसियोलॉजी उपलब्धता की पुष्टि करेंगे।

इन १५ अस्पतालों में मिलेगा मुफ्त उपचार
आचार्य विनोबा भावे ग्रामीण अस्पताल, वर्धा। आनंदक्रष्णजी हॉस्पिटल एंड मेडिकल रिसर्च सेंटर, अहिल्यानगर। आस्था प्लास्टिक सर्जरी हॉस्पिटल, जलगांव। बेंबडे हॉस्पिटल, छत्रपति संभाजीनगर। एलिट कॉस्मो क्लिनिक एंड प्लास्टिक सर्जरी

हॉस्पिटल, सोलापुर। लहाने हॉस्पिटल, लातूर। मीरा एनएक्स हॉस्पिटल, मुंबई। एमआरआर चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल, ठाणे। पूना हॉस्पिटल, पुणे। सहयोग हॉस्पिटल, गोंदिया। श्रीराम हॉस्पिटल, अकोला। शुश्रूषा सिटिजन्स को-ऑपरेटिव हॉस्पिटल, मुंबई। स्वामी विवेकानंद मेडिकल मिशन हॉस्पिटल, नागपुर। वेदांत हॉस्पिटल प्रा. लि., नाशिक वेस्टर्न इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंसेस (WINS), कोल्हापुर।

186 एकड़ में बनेगा...

इमारत आसपास के प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप होने के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होनी चाहिए। लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता संभाजी माने ने बताया कि परिसर की वास्तु शैली का विस्तृत अध्ययन करने के बाद मुख्य भवन का निर्माण किया जाएगा। प्रस्तावित कैंपस में पर्यावरण अनुकूल ग्रीन बिल्डिंग, ऊर्जा संरक्षण, २७ शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के लिए आवश्यक भवन, कृत्रिम जलाशय, करीब छह करोड़ लीटर पानी की भंडारण क्षमता और औषधीय उद्यान जैसी सुविधाएं विकसित करने की योजना है।बैठक में राज्य मंत्री आशीष जायसवाल, गोंडवाना विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलगुरु डॉ. श्रीराम कावळे, लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता संभाजी माने, अधीक्षण अभियंता सोनाली चव्हाण, वास्तुविशारद जगन्नाथ तावडेकर, विश्वविद्यालय अभियंता जितेंद्र अंबागडे और उमेश राठोड सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



मेघ राशि: इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। लंबे समय से रुके काम गति पकड़ेंगे और वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिल ने की संभावना है। व्यापार में नए संपर्क लाभदायक रहेंगे।

वृषभ राशि: वृषभ राशि वालों के लिए सप्ताह आर्थिक दृष्टि से अच्छा रह सकता है। रुका हुआ धन मिलने या आय के अतिरिक्त स्रोत बनने की संभावना है। नौकरीपेशा लोगों के काम की सराहना होगी।

मिथुन राशि: इस सप्ताह आपकी संवाद क्षमता कई बिगड़े काम बना सकती है। नौकरी में नए अवसर सामने आ सकते हैं और महत्वपूर्ण लोगों से संपर्क बढ़ेगा। व्यापारियों को नई योजना या साझेदारी का प्रस्ताव मिल सकता है। आर्थिक मामलों में स्थिति धीरे-धीरे बेहतर होगी।

कर्क राशि: कर्क राशि वालों को इस सप्ताह धैर्य और समझदारी से काम लेना होगा। कार्यक्षेत्र में अचानक जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। किसी सहकर्मी के साथ मतभेद होने की स्थिति में बातचीत से समाधान निकालें।

सिंह राशि: यह सप्ताह आत्मविश्वास और उपलब्धियों से भरा रह सकता है। कार्यक्षेत्र में आपकी नेतृत्व क्षमता सामने आएगी। पद-प्रतिष्ठा बढ़ने अथवा महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने के संकेत हैं।

कन्या राशि: कन्या राशि वालों के लिए यह सप्ताह योजनाओं को वास्तविक रूप देने का है। नौकरी में आपकी मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिल सकता है। वरिष्ठों से सहयोग मिलेगा और रुके हुए कार्य पूरे होंगे।

तुला राशि: इस सप्ताह नए अवसर आपका इंतजार कर सकते हैं। नौकरी बदलने की योजना बना रहे लोगों को कोई उपयोगी सूचना मिल सकती है। व्यापार में नया ग्राहक या बड़ा ऑर्डर मिलने की संभावना है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन विलासिता पर अधिक खर्च करने से बचें।

वृश्चिक राशि: वृश्चिक राशि वालों के लिए सप्ताह मेहनत और सावधानी दोनों की मांग करेगा। कार्यस्थल पर अपनी योजनाओं को गोपनीय रखना बेहतर होगा। किसी सहकर्मी या प्रतिस्पर्धी से चुनौती मिल सकती है।

धनु राशि: यह सप्ताह करियर और कारोबार में आगे बढ़ने के अवसर दे सकता है। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारी या बेहतर अवसर मिलने के संकेत हैं। व्यापार में दूर के संपर्कों से फायदा होगा।

मकर राशि: सप्ताह की शुरुआत व्यस्तता के साथ हो सकती है। कार्यक्षेत्र में मेहनत अधिक करनी पड़ेगी, लेकिन उसका परिणाम भी मिलेगा। पुराने लंबित काम पूरे होने से राहत मिलेगी। व्यापारियों को अटका हुआ भुगतान प्राप्त हो सकता है। आर्थिक मामलों में सोच-समझकर आगे बढ़ें।

कुंभ राशि: कुंभ राशि वालों के लिए सप्ताह नए विचारों और बदलावों का रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी रचनात्मक सोच की सराहना हो सकती है। नई नौकरी तलाश रहे लोगों को अवसर मिलने की संभावना है।

मीन राशि: मीन राशि वालों के लिए यह सप्ताह सकारात्मक परिणाम लेकर आ सकता है। लंबे समय से अटका हुआ कोई काम पूरा होने से राहत मिलेगी। नौकरी में आपकी मेहनत की प्रशंसा होगी और नई जिम्मेदारी मिल सकती है।



जल जरूरतों का स्पष्ट उल्लेख होगा? क्या नदी के पर्यावरणीय प्रवाह को जल बंटवारे का अनिवार्य हिस्सा माना जाएगा? क्या गाद और बाढ़ के प्रश्न पर समग्र नीति बनेगी? क्या नदी से जुड़े समुदायों की आजीविका को निर्णय प्रक्रिया में स्थान मिलेगा? और क्या बदलती जलवायु के अनुरूप नई व्यवस्था की समयबद्ध समीक्षा का प्रावधान होगा? दिसंबर २०२६ इसलिए केवल एक संधि की अवधि पूरी होने की तारीख नहीं है। यह भारत की जल नीति को नए सिरे से देखने का अवसर है। फरक्का रहेगा या हटेगा, यह महत्वपूर्ण प्रश्न हो सकता है, लेकिन उससे बड़ा प्रश्न यह है कि गंगा बचेगी कैसे। यदि किसी संरचना में परिवर्तन जरूरी है तो उसका निर्णय वैज्ञानिक प्रमाणों पर हो,यदि सुधार संभव है तो उसे लागू किया जाए। नीति का आधार राजनीतिक सुविधा नहीं, नदी और समाज का दीर्घकालिक हित होना चाहिए। फरक्का पर आज जो दबाव बन रहा है, उसे केवल राजनीतिक दबाव बनकर नहीं रहना चाहिए। उसे गंगा के न्याय की पुकार बनना होगा। बिहार को पानी चाहिए। बांग्लादेश को भी पानी चाहिए। लेकिन गंगा को भी अपना पानी चाहिए। नदी के हिस्से का पानी बचाए बिना किसी भी जल समझौते को न्यायपूर्ण नहीं कहा जा सकता। और इसीलिए फरक्का पर असली सवाल यह नहीं कि कौन किसके पक्ष में है। असली सवाल यह है कि क्या बिहार की जल-चिंता को वैज्ञानिक और संघीय अधिकार के प्रश्न के रूप में सुना जा रहा है, या उसे किसी दूसरी राजनीतिक पहचान में बदलने की कोशिश हो रही है। गंगा को धर्म की पहचान में बांटना उसके स्वभाव को समझने से इनकार करना होगा। नदी जोड़ती है, बांटती नहीं। इसलिए फरक्का की बहस को सांप्रदायिक भावनाओं की आग में झोंकने के बजाय विज्ञान, संघीय अधिकार, पड़ोसी देशों के हित और नदी के न्याय की कसौटी पर रखना होगा। यदि ऐसा हुआ तो दिसंबर २०२६ किसी पुरानी संधि की समाप्ति की तारीख भर नहीं होगी। वह गंगा के साथ एक नई समझ की शुरुआत बन सकती है,जिसमें बांग्लादेश का अधिकार, बिहार का जल-अधिकार और नदी का जीवन, तीनों सुरक्षित हों।

महानगर

IFAT India 2026 में गूंजा मीरा-भाईदर का स्वच्छता मॉडल

संवाददाता
मुंबई। शहरी स्वच्छता, ठोस कचरा प्रबंधन और पर्यावरणीय स्थिरता के भविष्य पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं सम्मेलन IFAT India 2026 में मीरा-भाईदर महानगर पालिका के स्वच्छता मॉडल और अनुभवों को राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया गया। गुरुवार को तीन दिवसीय आयोजन का उद्घाटन मीरा-भाईदर महानगर पालिका आयुक्त राधाबिनोद ए.शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। कार्यक्रम में देशभर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, नीति निर्माता, पर्यावरण विशेषज्ञ और तकनीकी क्षेत्र के प्रतिनिधि शामिल हुए। केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय (MoHUA) की ओर से आयोजित ‘Swachhata Beyond 2027: Shaping India’s Next Decade of Sanitation and Solid Waste Management’ विषयक सत्र को संबोधित करते हुए आयुक्त शर्मा ने शहरी स्वच्छता और ठोस कचरा प्रबंधन की चुनौतियों तथा आने वाले दशक की जरूरतों पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि 3 से 10 लाख आबादी वाले शहरों की श्रेणी में मीरा-भाईदर को देश का प्रथम स्वच्छ शहर चुना जाना और राष्ट्रपति पुरस्कार



मिलना महानगर पालिका प्रशासन, अधिकारियों, स्वच्छता कर्मचारियों और नागरिकों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि शहर को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी केवल महानगरपालिका की नहीं है, बल्कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी और जिम्मेदार व्यवहार भी उतना ही जरूरी है। आयुक्त शर्मा ने कहा कि लोगों के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए लगातार जनजागरूकता, प्रभावी संवाद और प्रोत्साहन की जरूरत है। नागरिकों की भागीदारी जितनी अधिक होगी, स्वच्छता अभियानों के दीर्घकालीन परिणाम उतने ही बेहतर होंगे। भविष्य की शहरी स्वच्छता व्यवस्था में आधुनिक तकनीक, नवाचार और

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के प्रभावी इस्तेमाल पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि तकनीक का उद्देश्य केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं को आसान बनाना नहीं, बल्कि नागरिकों को बेहतर सेवाएं देना, संसाधनों का उचित उपयोग करना और टिकाऊ शहरी विकास सुनिश्चित करना होना चाहिए। ठोस कचरा प्रबंधन में उन्होंने कचरे को उसके स्रोत पर ही अलग-अलग करने को सबसे महत्वपूर्ण कदमों में से एक बताया। स्रोत पर सही तरीके से कचरे का वर्गीकरण होने से उसके संग्रह, परिवहन, प्रसंस्करण और पुनर्प्राप्ति की पूरी व्यवस्था अधिक प्रभावी बनाई जा सकती है। शर्मा ने कहा कि कचरे को केवल नष्ट करने वाली वस्तु के रूप में

देखने के बजाय उसमें मौजूद संसाधनों की पुनर्प्राप्ति, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण की संभावनाओं पर ध्यान देना होगा। इससे न केवल ठोस कचरा प्रबंधन बेहतर होगा, बल्कि सर्कुलर इकोनॉमी को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि 2027 के बाद के दशक में शहरों को स्वच्छ बनाने के लिए स्थानीय निकायों को जनभागीदारी, आधुनिक तकनीक, नवाचार, संसाधनों के टिकाऊ प्रबंधन और प्रभावी प्रशासन के बीच बेहतर तालमेल बनाना होगा। स्वच्छता को सिर्फ कचरा उठाने और उसके निपटान तक सीमित न रखते हुए इसे नागरिकों के जीवन स्तर, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ शहरी विकास से जोड़कर देखना होगा। IFAT India 2026 जैसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंच पर मीरा-भाईदर के स्वच्छता मॉडल की प्रस्तुति को महानगरपालिका ने अपने स्वच्छता कर्मचारियों, अधिकारियों और नागरिकों के सामूहिक प्रयासों की पहचान बताया है। प्रशासन ने शहर की स्वच्छता व्यवस्था को आगे भी अधिक सक्षम, नागरिक केंद्रित और पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए प्रयास जारी रखने की बात कही है।

10 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने एक साथ बनाए इको-फ्रेंडली गणपति, महाराष्ट्र के नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

संवाददाता
ठाणे। नवी मुंबई के वाशी स्थित सिडको एक्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर में गुरुवार को आयोजित ‘पर्यावरणपूरक महा गणेश मूर्ति कार्यशाला-2026’ में 10 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने एक साथ शाडू मिट्टी से पर्यावरण अनुकूल गणेश प्रतिमाएं बनाकर महाराष्ट्र के नाम नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज कराया। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि गणेश प्रतिमा की भव्यता से अधिक महत्वपूर्ण भक्ति और पर्यावरण संरक्षण है। गणेशोत्सव जैसे सांस्कृतिक विरासत वाले पर्व को पर्यावरण अनुकूल तरीके से मनाना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान गणेश बुद्धि के देवता हैं और भारतीय संस्कृति में प्रकृति एवं पर्यावरण को विशेष महत्व दिया गया है। सृष्टि के आधार पंचमहाभूतों का संरक्षण होगा, तभी मानव जीवन भी सुरक्षित रह सकेगा। उन्होंने बड़ी गणेश प्रतिमाओं, प्लास्टर ऑफ पेरिस और कृत्रिम रंगों से जलस्रोतों को होने वाले नुकसान को रोकने की अपील की। फडणवीस ने कहा कि गणेश प्रतिमा छोटी हो या बड़ी, श्रद्धा और भक्ति में कोई अंतर नहीं होता। ईश्वर का आशीर्वाद प्रतिमा के आकार पर नहीं, बल्कि इस बात पर निर्भर



सीएम फडणवीस और पंकजा मुंडे ने भी शाडू मिट्टी से बनाई गणेश प्रतिमा, मुख्यमंत्री बोले- मूर्ति की भव्यता से ज्यादा भक्ति और पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण

करता है कि हम पर्यावरण और समाज की कितनी निस्वार्थ सेवा करते हैं। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के निर्णायकों द्वारा रिकॉर्ड की घोषणा किए जाने के बाद मुख्यमंत्री ने इसमें शामिल विद्यार्थियों को इस उपलब्धि का असली शिल्पकार बताया। उन्होंने पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री पंकजा मुंडे, पर्यावरण विभाग, जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट और कला संचालनालय के प्रयासों की भी सराहना की। पंकजा मुंडे ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि शाडू मिट्टी से गणपति बनाने वाले हजारों विद्यार्थियों ने स्वयं को ‘वसुंधरा रक्षक’ के रूप में साबित किया है। उन्होंने कहा कि अपनी

संस्कृति को संजोते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश घर-घर पहुंचाना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। कार्यशाला के दौरान ढोल-ताशों की गूंज के बीच मूर्तिकारों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने गणेश प्रतिमाएं की। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण तब रहा जब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और पंकजा मुंडे ने स्वयं शाडू मिट्टी हाथ में लेकर गणेश प्रतिमा बनाई। दोनों को अपने साथ प्रतिमा बनाते देखकर विद्यार्थियों में खासा उत्साह दिखाई दिया। कार्यक्रम में वन मंत्री गणेश नाईक, महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश कदम, विधायक मंदा म्हात्रे, विधायक रवींद्र फाटक, पर्यावरण

एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की सचिव जयश्री भोज, नवी मुंबई की महापौर सुजाता पाटील, मनपा आयुक्त कैलास शिंदे, ठाणे जिलाधिकारी डॉ. श्रीकृष्ण पांचाळ और कला संचालनालय के निदेशक डॉ. नितिन इंगळे सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों, कला विशेषज्ञों, प्राध्यापकों और हजारों गणेश भक्तों की मौजूदगी में आयोजित इस कार्यक्रम के जरिए पर्यावरण संरक्षण के साथ यह संदेश दिया गया कि हर परिवार पर्यावरण अनुकूल गणपति अपनाकर आस्था के साथ प्रकृति की रक्षा में भी योगदान दे सकता है।

गणेशोत्सव में 10 दिन शराबबंदी पर बॉम्बे हाई कोर्ट की फटकार, पुणे प्रशासन ने घटाई पाबंदी

कोर्ट ने पूछा- सिर्फ पुणे को ही क्यों चुना? अब दो दिन ही लागू रहेगी रोक, कलेक्टर को नया आदेश जारी करने के निर्देश

संवाददाता
मुंबई। गणेशोत्सव के दौरान पुणे में 10 दिनों तक शराब की बिक्री और सेवन पर रोक लगाने के फैसले पर बॉम्बे हाई कोर्ट ने शुक्रवार को प्रशासन को कड़ी फटकार लगाई। अदालत ने सवाल किया कि जब मुंबई सहित राज्य के अन्य जिलों में ऐसी पाबंदी नहीं लगाई गई तो केवल पुणे को ही क्यों चुना गया। कोर्ट के कड़े रुख के बाद प्रशासन ने पाबंदी की अवधि घटाकर केवल दो दिन करने की जानकारी दी। चीफ जस्टिस एम.सी. त्रिपाठी और जस्टिस अद्वैत सेठना की पीठ ने कहा कि यदि प्रशासन अपना आदेश वापस नहीं लेता है तो अदालत को हस्तक्षेप करना पड़ेगा। पीठ ने टिप्पणी की कि इस तरह केवल पुणे को चुनने से शहर और वहां के निवासियों की छवि पर



गलत असर पड़ता है। सुनवाई के दौरान सरकारी वकील केदार दिघे ने अदालत को बताया कि अब शराब की बिक्री और सेवन पर रोक 14 सितंबर को शाम 4 बजे तक और 25 सितंबर को पूरे दिन लागू रहेगी। 25 सितंबर पहले से ही ‘ड्राई डे’ है। अदालत ने इस बयान को स्वीकार करते हुए पुणे कलेक्टर को संशोधित आदेश जारी करने को कहा। होटल मालिकों और वाइन शॉप संचालकों के संगठनों ने

पुणे कलेक्टर के उस आदेश को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी, जिसमें गणेशोत्सव के दौरान 10 दिनों तक शराब की बिक्री पर पाबंदी लगाई गई थी। सुनवाई के दौरान पीठ ने प्रशासन से पूछा, “सिर्फ पुणे को चुनने के पीछे क्या तर्क है?” कोर्ट ने पुणे को सभ्य और शिक्षित शहर बताया हुए एक कहा कि क्या प्रशासन यह दिखाना चाहता है कि शराब पीने के बाद केवल पुणे के लोग ही गलत व्यवहार करते हैं।

अदालत ने इस तरह पूरे राज्य में से एक जिले को चुनकर पाबंदी लगाने पर आपत्ति जताई। पीठ ने माना कि प्रशासन की जिम्मेदारी कानून व्यवस्था बनाए रखने और किसी भी उपद्रव को रोकने की है, लेकिन इसके नाम पर लाइसेंसधारकों को लगभग 10 दिनों तक कारोबार करने से रोकने वाला एकतरफा आदेश उचित नहीं है। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने हल्के-फुल्के अंदाज में टिप्पणी की कि नियमित रूप से शराब पीने वालों को 10 दिनों तक शराब नहीं मिलने से स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है। अदालत ने यह भी कहा कि पूर्ण पाबंदी से राज्य के आवकारी राजस्व पर असर पड़ेगा। पीठ ने स्पष्ट किया कि यह मान लेना उचित नहीं है कि शराब का सेवन करने वाला हर व्यक्ति उपद्रव करेगा या कानून-व्यवस्था के लिए समस्या पैदा करेगा। अदालत की आपत्ति के बाद पुणे प्रशासन ने 10 दिनों की पाबंदी को घटाकर दो दिनों तक सीमित करने का फैसला किया।

135 करोड़ बैंक धोखाधड़ी मामले में ईडी की छापेमारी, सिंगापुर में 35.71 करोड़ की एफडी फ्रीज

संवाददाता
मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गजानन गंगामाई इंडस्ट्रीज एलएलपी

(GGI LLP) और अन्य से जुड़े कथित बैंक धोखाधड़ी एवं मनी लॉन्ड्रिंग मामले में बड़ी कार्रवाई की है। एजेंसी ने शुक्रवार को मुंबई और छत्रपति संभाजीनगर में छह आवासीय एवं व्यावसायिक परिसरों पर तलाशी ली। इस दौरान सिंगापुर स्थित बैंक खाते में करीब ३५.७१ करोड़ की फिक्स्ड डिपॉजिट फ्रीज करने के साथ एक लम्बरी बीएमडब्ल्यू कार जब्त की गई। ईडी के मुताबिक, तलाशी के दौरान इंडियन बैंक की सिंगापुर शाखा में मौजूद एक फिक्स्ड डिपॉजिट खाते को फ्रीज किया गया, जिसमें ३.७ मिलियन अमेरिकी डॉलर, यानी करीब ३५.७१ करोड़ जमा थे। इसके अलावा बीएमडब्ल्यू ३ २०४३ ग्रैंड लम्बरी लाइन कार तथा जांच

से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेज और डिजिटल उपकरण भी जब्त किए गए हैं। यह कार्रवाई ईडी के मुंबई जोनल कार्यालय-छ. ने धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA) के तहत की। मनी लॉन्ड्रिंग की जांच सीबीआई की पुणे स्थित एंटी करथान ब्रांच द्वारा दर्ज एफआईआर और उसके बाद दाखिल चार्जशीट के आधार पर शुरू की गई थी। इसमें GGI LLP, उसके साझेदारों और अन्य पर धोखाधड़ी, आपराधिक साजिश तथा आपराधिक कदाचार के आरोप हैं। ईडी के अनुसार, उच्च ष्छ ने बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले बैंकों के कंसोर्टियम से ऋण लिया था। बाद में ये ऋण खाते नॉन-परफॉर्मिंग एसेट (NPA) बन गए और करीब

9 ३५ करोड़ की बकाया राशि रह गई। एजेंसी का कहना है कि बाद में कंसोर्टियम में शामिल बैंकों ने संशोधित खातों को फ्रॉड घोषित कर दिया। जांच एजेंसी का आरोप है कि ऋण के रूप में प्राप्त धनराशि को कथित तौर पर कंपनियों के एक नेटवर्क के जरिए डायवर्ट या हड़प लिया गया। ईडी के मुताबिक, कई शेल कंपनियों और कथित एंटी प्रोवाइडर्स के माध्यम से कई स्तरों पर लेन-देन करने के बाद रकम का एक हिस्सा नकदी के रूप में निकाला गया। एजेंसी को संदेह है कि इन लेन-देन के जरिए कथित अपराध की आय के वास्तविक स्रोत, उसके आवागमन और इस्तेमाल को छिपाने की कोशिश की गई। मामले में ईडी की आगे की जांच जारी है।

रील में ‘डॉन’, पांच घंटे में पुलिस ने उतारा ‘चूहा पठान’ का टशन

इंद्र यादव
मुंबई। सोशल मीडिया पर खुद को बड़ा डॉन और ‘चूहा पठान’ बताकर रील्स में छाती ठोकना विक्रोली के एक युवक को भारी पड़ गया। जनाब कैमरे के सामने ऐसे डायलॉग मार रहे थे, मानो मुंबई का पूरा अंडरवर्ल्ड इन्हीं के इशारे पर चलता हो। लेकिन सोशल मीडिया का ‘डॉन’ जब पार्कसाइड पुलिस के रडार पर आया तो महज पांच घंटे में सारा टशन उतर गया और पुलिस ने उसे धर दबोचा। मामला तब सामने आया जब सोशल एक्टिविस्ट डॉ. विनु वर्गीस ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया। वीडियो में युवक कथित तौर पर खुलेआम दबंगी दिखाते और अपने आपराधिक मामलों का बखान करते नजर आया। वीडियो सामने आने के बाद पार्कसाइड पुलिस ने संज्ञान लिया और पुलिस के मुताबिक करीब पांच घंटे के भीतर आरोपी को पकड़ लिया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान फिरोज मोहम्मद शकील शेख उर्फ ‘चूहा पठान’ (25) के रूप में हुई है। वह विक्रोली पश्चिम के टीडी अंबिका नगर चाल का रहने वाला बताया गया है। सोशल मीडिया रील में वह कथित तौर पर कह रहा था— “तुम्हारी उम्र से ज्यादा केस हैं मेरे पे”। शायद जनाब इसे अपनी ‘उपलब्धि’ समझकर सुना रहे

‘उम्र से ज्यादा केस हैं मेरे पे’ कहकर सोशल मीडिया पर दिखा रहा था मौकाल; पार्कसाइड पुलिस ने दबोचा, 9 मोबाइल बरामद



थे, लेकिन यही भौकाल पुलिस के लिए उसका पता लगाने का रास्ता बन गया। पुलिस के अनुसार, आरोपी कोई नया खिलाड़ी नहीं है। उसके खिलाफ पार्कसाइड, घाटकोपर, पंतनगर और निर्मलनगर पुलिस थानों में सेंधमारी, चोरी, घरफोड़ और अवैध हथियार रखने सहित करीब 20 मामले पहले से दर्ज हैं। यानी रील में मामलों की संख्या गिनाकर जो ‘डॉनगिरी’ दिखाई जा रही थी, पुलिस रिकॉर्ड ने उस मोहम्मद शकील शेख उर्फ ‘चूहा पठान’ (25) के रूप में हुई है। वह विक्रोली पश्चिम के टीडी अंबिका नगर चाल का रहने वाला बताया गया है। सोशल मीडिया रील में वह कथित तौर पर कह रहा था— “तुम्हारी उम्र से ज्यादा केस हैं मेरे पे”। शायद जनाब इसे अपनी ‘उपलब्धि’ समझकर सुना रहे

पुलिस बरामद सामान और आरोपी से जुड़े अन्य मामलों की जांच आगे बढ़ा रही है। कुल मिलाकर सोशल मीडिया पर ‘डॉन’ बनने का शौक चूहा पठान को महंगा पड़ गया। रील में डायलॉग था— उम्र से ज्यादा केस हैं, और पुलिस ने मानो जवाब दे दिया— केसों का भौकाल दिखाओगे तो खाकी दरवाजे तक पहुंचने में देर नहीं लगाएगी। सोशल मीडिया की दुनिया में कैमरा ऑन करके ‘भाई’, ‘डॉन’ और ‘गैंगस्टर’ बनना आसान है, लेकिन कानून की दुनिया लाइक, व्यू और फॉलोअर्स से नहीं चलती। ‘चूहा पठान’ की रील का टशन फिलहाल पुलिस कार्रवाई पर आकर थम गया है। अब आगे की कहानी सोशल मीडिया नहीं, कानूनी प्रक्रिया तय करेगी।

वाशिम के जिला परिषद स्कूल में छात्राओं से कथित यौन उत्पीड़न, शिक्षक गिरफ्तार

संवाददाता
वाशिम। महाराष्ट्र के वाशिम जिले के एक जिला परिषद स्कूल में कक्षा तीसरी और चौथी की छात्राओं के कथित यौन उत्पीड़न का मामला सामने आया है। पुलिस ने इस मामले में 56 वर्षीय शिक्षक दिलीप बोरकर को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (BNS) और बच्चों को यौन अपराधों से संरक्षण (POCSO) अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, कथित घटनाएं पिछले कई महीनों से हो रही थीं। मामला उस समय सामने आया जब छात्राओं को ‘गुड टच और बैड टच’ के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने स्कूल की एक महिला शिक्षिका को अपने साथ कथित तौर पर हो रहे अनुचित व्यवहार के बारे में बताया। यह संदेश दिया गया कि हर परिवार पर्यावरण अनुकूल गणपति अपनाकर आस्था के साथ प्रकृति की रक्षा में भी योगदान दे सकता है।



कथित यौन उत्पीड़न करने का आरोप मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। उस पर बच्चियों को मोबाइल पर आपत्तिजनक वीडियो दिखाने और घटनाओं के बारे में किसी को बताने पर स्कूल नहीं आने देने की धमकी देने का भी आरोप लगाया गया है। इन आरोपों की पुलिस जांच कर रही है। बताया गया है कि 8 सितंबर को कक्षाएं समाप्त होने के बाद एक महिला शिक्षिका घर जा रही थीं, तभी कुछ छात्राएं उनके पीछे से गुजरतीं और स्कूल परिसर में उन्हें अकेला नहीं छोड़ने की बात कहते हुए रोने लगीं। शिक्षिका ने कारण पूछा तो

बच्चियों ने कथित घटनाओं के बारे में जानकारी दी। इसके बाद शिक्षिका ने छात्राओं के परिजनों से संपर्क किया और मामला पुलिस तक पहुंचा। काटा जिला परिषद स्कूल में कक्षा पहली से चौथी तक पढ़ाई होती है और वहां चार शिक्षक कार्यरत बताए गए हैं। घटना सामने आने के बाद पुलिस ने पीड़ित छात्राओं के साथ अन्य बच्चों के बयान भी दर्ज करने शुरू कर दिए हैं। पुलिस स्टेशन प्रभारी श्रीदेवी पाटिल के मुताबिक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और मामला बेहद संवेदनशील होने के कारण हर पहलू से जांच की जा रही है। पुलिस को आशंका है कि अन्य छात्राएं भी इस तरह के कथित व्यवहार का सामना कर चुकी हो सकती हैं। ऐसे में अभिभावकों से सामने आकर पुलिस को जानकारी देने की अपील की गई है। पुलिस अब तक करीब आठ से दस छात्राओं से पूछताछ कर चुकी है। मामले में पीड़ित बच्चियों अकेला नहीं छोड़ने की बात कहते हुए रोने लगीं। शिक्षिका ने कारण पूछा तो

महाराष्ट्र में ड्राइवरों की होगी ड्रग्स और शराब की जांच ‘नशामुक्त ST’ अभियान की तैयारी

संवाददाता
वाशिम। महाराष्ट्र में सड़क यात्रा को अधिक सुरक्षित, अनुशासित और भरोसेमंद बनाने के लिए अब वाहन चालकों के शराब और नशीले पदार्थों के सेवन की जांच व्यवस्था को व्यापक बनाने की तैयारी है। परिवहन विभाग ‘नशामुक्त चालक, सुरक्षित यात्रा, सक्षम महाराष्ट्र’ की अवधारणा पर आधारित ‘नशामुक्त एसटी महामंडल’ अभियान शुरू करने जा रहा है। इसके तहत सरकारी परिवहन के साथ निजी यात्री वाहनों को भी जांच के दायरे में लाने की योजना है। परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक ने बताया कि 2026 से 2029 के दौरान राज्यव्यापी शराब एवं मादक पदार्थ जांच अभियान के तहत विभिन्न यात्री और मालवाहक सेवाओं में एकीकृत जांच व्यवस्था लागू करने के लिए कार्यप्रणाली और दिशा-निर्देश तैयार किए जाएंगे। प्रस्तावित अभियान में महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन महामंडल (MSRTC), महानगरपालिका बस सेवाएं, सरकारी



वाहन, सार्वजनिक उपक्रम और सरकार के लिए चलने वाले ठेका वाहन शामिल किए जाएंगे। इसके अलावा निजी बसों, पर्यटन वाहनों, टैक्सि, ऐप आधारित कैब, ऑटोरिक्षा और कॉन्ट्रैक्ट यात्री परिवहन सेवाओं में भी जांच व्यवस्था लागू करने की योजना बनाई जा रही है। जांच के साथ उपचार और पुनर्वास पर भी जोर

रोकथाम, उपचार और पुनर्वास को भी एक साथ जोड़ा जाएगा। सरकार का लक्ष्य ‘विकसित महाराष्ट्र 2047’ के अनुरूप सुरक्षित और सक्षम सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था तैयार करना है। एसटी महामंडल के अध्यक्ष के रूप में प्रताप सरनाईक ने चालकों और परिचालकों की ड्रग सेवन जांच के लिए मशीनें खरीदने हेतु 1 लाख देने की घोषणा भी की। इस राशि से जांच उपकरण खरीदे जाएंगे। बैठक में एसटी महामंडल और राज्य परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

ज्ञान, कौशल, बल, बुद्धि, विवेक एवं साहस के देवता भगवान गणेश

पवन कुमार वर्मा

सर्वप्रथम पूजा के अधिकारी भगवान गणेश की उपासना, आराधना एवं पूजा भारत के कोने-कोने में होती है। शैव मत के धर्मावलम्बी उन्हें भगवान शिव का पुत्र मानते हैं तो वैष्णव एवं शाक्त मतों के धर्मावलम्बी उनकी उपासना एवं आराधना लक्ष्मी के साथ करते हैं। गणेश का शाब्दिक अर्थ होता है गुणों अर्थात् समुदायों के अधिपति (अर्थात् गणपति)। पर व्यावहारिक रूप में भगवान गणेश को गुणों का अधिपति माना जाता है। वे बुद्धि, विवेक, ज्ञान, कौशल, बल एवं साहस के भी देवता माने जाते हैं। गणेशजी का स्वरूप उनके गुणों का ही प्रतिनिधित्व करता है। जैसे वह मूषक (चूहे) पर सवारी करते हैं। चूहे छुपकर अनाज खाकर मानव के खाद्य पदार्थों को क्षति पहुंचाते हैं और इस तरह राष्ट्र की समृद्धि को नुकसान पहुंचाते हैं। गणेश जी की मूषक सवारी का अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र की समृद्धि को क्षति पहुंचाने वालों पर हमारा पूरा निरंत्रण होना चाहिए। गणेश के कान बड़े होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हममें सबकी बातें सुनने का गुण होना चाहिए। गणेश जी को लम्बोदर कहा जाता है, इसका अर्थ यह है कि वे सबकी बात सुनते हैं और इन बातों को उदरस्थ कर जाते हैं, पर जो भी करते हैं अपने बुद्धि और विवेक से करते हैं। गणेश जी मस्तक पर चंद्रमा धारण करते हैं, इसका अर्थ यह है कि हमें किसी बात पर विचार करते समय ठंडे मस्तक से विचार करना चाहिए।

गणराज्य शब्द की उत्पत्ति भी गणेश के बहुत निकट है। पौराणिक संदर्भों के अनुसार उन्हें भगवान शिव के भक्तों का स्वामी माना गया है। गण (प्रजा) के स्वामी के रूप में उनका स्वरूप या आकृति आदर्श है। गणपति या गणेश का विशाल मस्तक उनके बुद्धिमान होने का प्रतीक है। वैसे भी हाथी को सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी माना गया है। गणेश जी का हाथी के समान मस्तक इस बात का प्रतीक है कि प्रजा के नायक को बुद्धिमान होना चाहिए। उनके विशाल कान इस तथ्य के प्रतीक हैं कि गणनायक को प्रत्येक बात की सूचना प्राप्त करने की कुशलता होना चाहिये। गणेश का स्वरूप चतुर्भुज है। वे एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में मोदक, तीसरे हाथ में पुस्तक तथा चौथे हाथ में कमल का फूल धारण करते हैं। अब ये चार हाथ और उनमें धारण की गई वस्तुएं भी विविध गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। त्रिशूल का अर्थ है कि वे रक्षक हैं मोदक का अर्थ है खाद्य सामग्री, पुस्तक का अर्थ है ज्ञान तथा कमल पुष्प का अर्थ है कोमलता। इसका सीधा अर्थ यह है कि प्रजानायक या गुणनायक को रक्षक, खाद्य पदार्थों का दाता, ज्ञान देने वाला तथा कोमल हृदय का होना चाहिए। उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक जिन गणेश जी की उपासना, आराधना एवं वंदना की जाती है तथा प्रत्येक शुभ एवं मंगल कार्य में सर्वप्रथम जिनकी पूजा की जाती है, उनकी उत्पत्ति, स्वरूप, गुण, धर्म एवं कर्म की अनेक



गाथाएं भारतीय ग्रंथों में मिलती हैं। उन्हें शिव एवं पार्वती का पुत्र मानते हुए जहां कुछ विद्वान उन्हें द्रविड़ों का देवता मानते हैं, वहीं आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में भी उनकी वंदना की गई है। गणेश जी को गुणों का स्वामी माना जाता है, इसलिए उन्हें बुद्धि का दाता कहा जाता है। उनकी पत्नियों के नाम भी बुद्धि और सिद्धि कहे गए हैं। महाभारत को लिपिबद्ध करने के बारे में एक कथा है कि वेद व्यास ने इसे बोला तथा भगवान गणेश ने लिपिबद्ध किया। तब महाभारत के श्लोकों को समझने में बुद्धि ने ही अपने पति गणेश जी की सहायता की थी। गणेश जी के दो पुत्र भी माने जाते हैं, शुभ और लाभ। गणेश सिर्फ हिन्दुओं के ही देवता नहीं हैं। जैन धर्म में भी उनकी वंदना की गई है। बौद्ध तांत्रिकों के भी वे आराध्य देव हैं। भारत के बाहर नेपाल, तिब्बत, जावा, बाली, चीन तथा जपान में भी उनकी पूजा होती रही है।

गणेश जी के नाम भी अनेक हैं। पुराणों में उनके अनेक नाम मिलते हैं। गणेश सहस्त्र नाम से यह सिद्ध होता है कि उनके एक हजार नाम हैं। उनके प्रसिद्ध नामों में गणपति, वक्रतुण्ड, महाकाय, एकदन्त, गणदेवता, गणेश्वर, विनायक आदि मुख्य हैं। उनके एकदंत और गजानन होने के संबंध में पुराणों में अनेक कथाएं हैं। एक दंत होने की कथा इस प्रकार है कि एक बार परशुराम शिवजी से मिलने गए। दरवाजे पर गणेश रक्षक के रूप में बैठे थे। गणेश ने परशुराम को प्रवेश करने से रोका इस पर दोनों में विवाद हुआ और बात लड़वाई तक पहुंच गई। इस लड़ाई में परशुराम ने फरसे से प्रहार किया, जिसमें गणेश का एक दांत टूट गया। इस कारण उन्हें एकदंत कहा जाता है।



गजानन के बारे में स्कन्द पुराण की एक कथा के अनुसार एक समय पार्वती ने शनि को बुलाया कि वह गणेश को देखने आए। शनि आए तो किन्तु वे सिर नीचे करके बैठे रहे। पार्वती ने पूछा कि मेरे पुत्र को आप क्यों नहीं देख रहे हैं। शनि ने कहा कि यदि मैं इस बच्चे को देखूंगा तो इसका सिर नष्ट हो जाएगा। यह कहकर शनि ने गणेश को देखा और गणेश का सिर जलकर भस्म हो गया। इस पर ब्रह्मा ने कहा कि सबसे पहले जो प्राणी मिले उसका सिर काटकर गणेश के सिर के स्थान पर लगा दिया जाए। पार्वती को सबसे पहले हाथी मिला, जिसका सिर उन्होंने काट कर गणेश के सिर पर रख दिया। इस कारण ये गजानन कहलाए। एक दूसरी कथा के अनुसार पार्वती एक बार स्नान करने के लिए गई और अपने घर के दरवाजे पर गणेश को रक्षक के रूप में बैठा गई। इसी बीच शिवजी आए और उन्होंने घर में प्रवेश करना चाहा। गणेश ने उन्हें प्रवेश करने से रोका। इस पर क्रोध में आकर शिवजी ने गणेश जी का सिर काट दिया। जब पार्वती को पता लगा। तब शिवजी ने हाथी का सिर काटकर गणेश के सिर के स्थान पर जोड़ दिया।

उनकी सर्वप्रथम पूजा होने के संबंध में भी अनेक कथाएं मिलती हैं। इस बारे में प्रचलित एक कथा यह है कि एक बार देवताओं में यह विवाद हुआ कि सर्वप्रथम किस देवता की पूजा हो। विवाद बढ़ा तो निर्णय भगवान शिव को सौंप दिया गया। भगवान शिव ने कहा कि जो देवता सबसे पहले तीनों लोकों की परिक्रमा कर लेगा, उसकी पूजा सबसे पहले होगी। सब देवता अपने-अपने वाहनों से तीनों लोकों की परिक्रमा के लिए रवाना हो गए। पर गणेशजी ने भगवान शिव की ही परिक्रमा कर डाली। भगवान

शिव ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि तीनों लोक आप में ही हैं। आपकी परिक्रमा का ही अर्थ है तीनों लोकों की परिक्रमा। इस उत्तर से भगवान शिव इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने गणेश जी की पूजा सर्वप्रथम करने का निर्णय दे दिया। यह कथा कुछ और स्वरूपों में भी प्रचलित है पर निष्कर्ष यही है कि सर्वप्रथम पूजा गणेशजी की ही होती है। हर मंगल कार्य का शुभारंभ गणेश जी की पूजा से ही होता है। यात्रा का आरंभ गणेश जी का नाम लेकर किया जाता है। खता-बहियों की शुरुआत भी श्री गणेशाय नमः से होती है और आज तो किसी काम को प्रारंभ करने को ही श्री गणेश करना कहा जाता है। ऋग्वेद के मंत्र ‘गणानां त्वा गणपति ऊं हवामहे’ तथा यजुर्वेद के मंत्र ‘नमो गणेश्यो गणपतिम्यदा वो नमो नमः’ से जिन गणेश और गणपति की वंदना और आराधना शुरू हुई थी वह आज भी जारी है। बीसवीं शताब्दी में तो भगवान गणेश ने राष्ट्रीय चेतना की भावना का श्री गणेश किया था। गणेशोत्सवों ने इस देश में राष्ट्रीय चेतना की जो ज्वाला प्रज्वलित की थी, वह हमारे स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बन गई थी। ऋग्वेद से लेकर आज तक भगवान गणेश अनेक गुणों को लेकर अवतरित हुए और उनकी अनंत कथाएं भी प्रचलित रही।

गणेशजी इतने गुणों के स्वामी हैं कि उनके इन गुणों एवं स्वरूप के आधार पर ही उनके एक हजार नाम प्रचलित हैं। पर मुख्य रूप से उनके द्वादश नाम प्रचलित हैं, जिनके नियमित पाठ से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं तथा सभी मनोरथों की सिद्धि होती है। इस संबंध में यह मंत्र प्रचलित है-

ओम् सुमुख श्रैक दंतश्च कपिलौ गजकर्णक लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक धृष केतु गणध्ययश्चो भाल चंद्रो गजानन द्वादशैतानि नामानि य पठेच्च्युत यदापि।

गणेश जी की उपासना एवं आराधना इतनी प्राचीन है कि उनके अनेक अवतारों के वर्णन भी धर्मग्रंथों में मिलते हैं। उनके को मुख्य अवतार हुए हैं वे है- वक्रतुण्डावतार, एकदंतावतार, महोदरावतार, गजाननावतार, लम्बोदरावतार, विकटावतार। विघ्नराजावतार में मल्लसारसुर से, एकदंतावतार में मदामुर से, महोदरावतार में मोहासुर से, गजाननावतार में लोभासुर से, लम्बोदरावतार में क्रोधासुर से विकटावतार में कामासुर से, विघ्नराजावतार में ममतासुर से, धूम्रवर्णवतार में अभिमानानुसार से देवताओं और मानव जाति को मुक्ति दिलाई। इन अवतारों की कथा से एक और तथ्य स्पष्ट होता है कि भगवान गणेश गुणों के देवता ही नहीं हैं, अपितु अस्वगुणों से विशेषकर मद, मोह, लोभ, क्रोध, काम, माया एवं अभिमान से भी मुक्ति दिलाते हैं।

भाद्रपद माह के शुक्लपक्ष की चतुर्थी को सारे देश में ग्यारह दिवसीय गणेशोत्सव मनाया का क्रम प्रारंभ हो जाता है, पर गणेश जी की उपासना एवं आराधना वर्ष भर ही चलती रहती है। हर मंगल कार्य में यहां तक कि दैनिक उपासना एवं आराधना में भी गणेश जी को सर्वप्रथम स्मरण किया जाता है। माह में दो बार अपने वाली चतुर्थी को भी गणेश जी की उपासना की जाती है। इन चतुर्थी में से कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को संकट नाशक चतुर्थी तथा शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहा जाता है। इन चतुर्थी पर हजारों भारतवासी गणेश जी की आराधना एवं उपासना करते हैं तथा उपवास रखते हैं। संकट नाशक चतुर्थी को गणेश जी की आराधना करने एवं उपवास करने से हर प्रकार के संकटों का नाश हो जाता है। (**विनायक फीचर्स**)

भारत के दस प्रमुख गणेश मंदिर

अंजनी सक्सेना

भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा में भगवान श्री गणेश प्रथम पूज्य देव हैं। किसी भी मांगलिक कार्य, यज्ञ, अनुष्ठान या नए व्यवसाय के शुभारंभ से पूर्व विघ्नहर्ता श्री गणेश का आह्वान अनिवार्य माना जाता है। भारत के कोने-कोने में गणपति बप्पा के अनगिनत मंदिर स्थापित हैं, लेकिन कुछ मंदिर अपनी प्राचीनता, चमत्कारी मान्यताओं, वास्तुकला और अगाध जन-आस्था के कारण विशेष स्थान रखते हैं।

श्री सिद्धिविनायक मंदिर (मुंबई, महाराष्ट्र): मुंबई के



प्रभादेवी इलाके में स्थित सिद्धिविनायक मंदिर भारत के सबसे प्रसिद्ध और समृद्ध मंदिरों में से एक है। इस मंदिर की स्थापना 19 नवंबर 1801 को लक्ष्मण विट्ठू और देउबाई पाटिल द्वारा कराई गई थी। सामान्यतः गणेशजी की प्रतिमा में सूंड बाईं ओर मुड़ी होती है, परंतु सिद्धिविनायक में बप्पा की सूंड दाईं ओर मुड़ी हुई है। दाईं सूंड वाले गणेशजी को सिद्धपीठ माना जाता है, जो भक्तों की मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण करते हैं। मंदिर का गर्भगृह लकड़ी के दरवाजों पर उकेरी गई अष्टविनायक की छवियों से सुसज्जित है। आम जनमानस से लेकर बॉलीवुड सितारे, उद्योगपति और वैश्विक हस्तियां यहां माथा टेकने आते हैं।

श्रीमंत दगडूशेट हलवाई गणपति मंदिर (पुणे, महाराष्ट्र):



पुणे का दगडूशेट हलवाई मंदिर अपनी भव्यता और अटूट आस्था के लिए जाना जाता है। इसका निर्माण 1893 में प्रसिद्ध मिश्रान विक्रंता श्रीमंत दगडूशेट हलवाई और उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई ने अपने पुत्र की प्लेग बीमारी से असमय मृत्यु के बाद करवाया था। मंदिर में स्थापित गणेशजी की मूर्ति 7.5 फीट ऊंची और 4 फीट चौड़ी है, जिसे शुद्ध सोने के आभूषणों से सजाया जाता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इसी मंदिर के सानिध्य में

सार्वजनिक गणेशोत्सव की शुरुआत की थी। गणेश चतुर्थी के दौरान यहां का भव्य पांडाल और रोशनी देखने योग्य होती है।



सवाई माधोपुर जिले में स्थित रणथंभौर दुर्ग के शीर्ष पर यह मंदिर लगभग 1000 वर्ष पुराना है। इसका निर्माण राजा हम्मीरदेव चौहान ने 1301 ईस्वी में करवाया था। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहां भगवान गणेश अपने संपूर्ण गृहस्थ परिवार पत्नी रिद्धि-सिद्धि और पुत्र शुभ-लाभ के साथ त्रिनेत्र (तीन आंखों वाले) रूप में



विराजमान हैं। देश-विदेश से श्रद्धालु अपने घर के विवाह या शुभ कार्य का पहला निर्मंत्रण पत्र (कार्ड) यहां डाक द्वारा भेजते हैं, जिसे मंदिर के पुजारी बप्पा के चरणों में बैठकर उन्हें पढ़कर सुनाते हैं।

कनिपकम विनायक मंदिर (चित्तूर, आंध्र प्रदेश): आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित कनिपकम विनायक मंदिर एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है। इस मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में चोल राजा कुलोतुंग चोल प्रथम द्वारा करवाया गया था। मान्यता है कि यहां स्थित बाहुदा नदी के जल से गणेशजी की प्रतिमा स्वयंभू (स्वयं प्रकट) हुई थी। स्थानीय निवासियों का मानना ​​है कि यह प्रतिमा वर्ष-दर-वर्ष अपने आकार में सूक्ष्म वृद्धि करती है। मंदिर के प्रांगण में स्थित कुएं का जल कभी सूखता नहीं और इसमें स्नान करने से कई विकार दूर होते हैं।



की व्यावसायिक राजधानी इंदौर में स्थित खजुराना गणेश मंदिर

मालवा अंचल की अगाध आस्था का केंद्र है। इस मंदिर का निर्माण 1735 में होल्कर वंश की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था। कहा जाता है कि औरंगजेब के शासनकाल में मूर्ति की रक्षा के लिए इसे एक बावड़ी में छिपा दिया गया था, जिसे बाद में निकालकर यहां स्थापित किया गया। यहां भक्त अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए मंदिर की पिछली दीवार पर उल्टा स्वस्तिक बनाते हैं और मन्त्र पूरी होने पर पुनः सीधा स्वस्तिक बनाने आते हैं।



चिंतामन गणेश मंदिर (उज्जैन, मध्य प्रदेश): शिप्रा नदी के तट पर बसी पवित्र नगरी उज्जैन में चिंतामन गणेश मंदिर

पौराणिक महत्व रखता है। रामायण काल से जुड़े इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि वनवास के दौरान भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता ने इसकी स्थापना की थी। गर्भगृह में तीन प्रतिमाएं एक साथ स्थापित हैं- चिंतामण (चिंताओं को दूर करने वाले), इच्छामन (इच्छाओं को पूर्ण करने वाले) और सिद्धिविनायक (कार्यों में सिद्धि देने वाले)।

उच्चै पिळयार मंदिर (तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु): तमिलनाडु के त्रिची शहर में एक 273 फीट ऊंची विशाल चट्टान (रॉकफोर्ट) के शीर्ष पर उच्चै पिळयार मंदिर स्थित है, जहां पहुंचने के लिए लगभग 437 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, रावण वध के पश्चात जब विभीषण भगवान श्रीराम से प्राप्त विष्णु प्रतिमा ले जा रहे थे, तब गणेशजी ने बालक का रूप धरकर प्रतिमा को यहीं भूमि पर स्थापित करवा दिया था। सातवीं शताब्दी का यह मंदिर पल्लव और नायक वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है।

मोती डूंगरी गणेश मंदिर (जयपुर, राजस्थान): जयपुर शहर के केंद्र में एक छोटी पहाड़ी पर स्थित मोती डूंगरी गणेश मंदिर उत्तर भारत का प्रमुख धार्मिक स्थल है। इस मंदिर की स्थापना 1761 में सेठ जयराम पालीवाल द्वारा महाराजा माधोसिंह प्रथम के संरक्षण में की गई थी। यहां विराजमान गणेशजी

की मूर्ति मावली (उदयपुर) से लाई गई थी, जो दाहिनी सूंड वाली है। जयपुर और आसपास के क्षेत्रों में नया वाहन खरीदने पर सर्वप्रथम उसे मोती डूंगरी मंदिर में लाकर पूजा करवाने की अटूट परंपरा है।

मनकुला विनायगर मंदिर (पुडुचेरी): पुडुचेरी के तटीय क्षेत्र में स्थित मनकुला विनायगर मंदिर 300 वर्ष से भी अधिक



प्राचीन है। मनकुला का अर्थ होता है रेत का तालाब। फ्रांसीसी शासनकाल के दौरान इस मंदिर को नष्ट करने और प्रतिमा को समुद्र में फेंकने के कई प्रयास किए गए, लेकिन पौराणिक मान्यताओं के अनुसार प्रतिमा हर बार पुनः उसी स्थान पर प्रकट हो जाती थी। मंदिर की दीवारों पर गणेशजी के 16 अवतारों की सुंदर नक्काशी की गई है।

गणपतिपुले मंदिर (रत्नागिरी, महाराष्ट्र): महाराष्ट्र के कोंकण तट पर स्थित गणपतिपुले मंदिर अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। अधिकांश मंदिरों में मूर्तियां पूर्व या उत्तरमुखी होती हैं, परंतु यहां गणेशजी की स्वयंभू प्रतिमा पश्चिम (समुद्र की ओर) उन्मुख है। मंदिर बिल्कुल अरब सागर के किनारे स्थित है और भक्तजन मंदिर की परिक्रमा करने के लिए पूरे पर्वत की परिक्रमा करते हैं, जिसे गिरी प्रदक्षिणा कहा जाता है।

भारत के ये दस प्रमुख गणेश मंदिर न केवल हमारी पौराणिक विरासत और सनातन संस्कृति के प्रतीक हैं, बल्कि देश की स्थापत्य कला एवं विविध जन-विश्वासों को भी दर्शाते हैं। चाहे महाराष्ट्र का सिद्धपीठ क्षेत्र हो, दक्षिण भारत की द्रविड़ स्थापत्य शैली हो या राजस्थान के दुर्ग में विराजित त्रिनेत्र स्वरूप,प्रत्येक धाम में विघ्नहर्ता अपने भक्तों के कष्ट हरने और उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करने के लिए विद्यमान हैं। (**विभूति फीचर्स**)